Success Stories in Project

Promotion of Sustainable Livelihood around Protected Forest Area

April 2014 to March 2016

Community Development Centre [CDC] Balaghat

Supported by : Paul Hamlyn Foundation, UK

सी.डी.सी. परियोजना में ऐसे परिवारों के साथ काम कर रही है जिनके जीवन में कई प्रकार के आभाव हैं कोई बेहतर और पर्याप्त भोजन के आभाव में है कोई बच्चों को चाह कर भी बेहतर शिक्षा नहीं दिलवा पा रहा है किसी को बीमारी के इलाज के लिए पैसे चाहिए, कोई अपने लिए कृषि संसाधनों का सृजन करना चाहता है, ये ऐसे लोग हैं जो समाज के हाशिये में रह कर जीवन जीते हैं और जिनके लिए ना कोई आवाज उठाता है और ना ही ये प्रभावी तरीके से अपने लिए कुछ कर पाने में सक्षम हैं, कहने को तो इनके पास जमीने हैं पर बिना पर्याप्त सिंचाई और तरीकों के अपने स्तर से ऊपर भी नहीं उठ पा रहे हैं | संस्था ने इन्ही जैसे 300 परिवारों के साथ काम करना प्रारंभ किया और गैर परम्परागत फसलों से जोड़ने की कोशिश की, लगभग 80 प्रतिशत किसानो ने डर-डर के अपने छोटे छोटे क्षेत्र में आलू की फसल लगाई, कई परेशानियों का सामना भी किया जैसे पर्याप्त सिंचाई सुविधा नहीं थी तो दूर से पानी लाकर सिंचाई की, ओले और बारिश ने फसल का नुकसान किया, कहीं जंगली जानवरों ने फसलों को बर्बाद किया, और सरकार से मुआवजा भी नहीं मिला, इन सब परेशानियों के बावजूद कई ऐसे कृषक हैं जो एक दुसरे के लिए प्रेरणास्रोत बन रहे हैं | किसी ने भी व्यावसायिक रूप से आलू, अदरक, हल्दी की फसल नहीं ली थी, काफी चर्चा और प्रेरणा के बाद कृषको ने शुरुवात की है, जिसके कुछ बेहतर उदारहण हैं जिनका उल्लेख यहाँ किया जा रहा है, बेशक एक फसल से और 5000 रु. की अतिरिक्त आय बहुत मायने नहीं रखती पर इनके लिए तो मायने रखती है क्योकि इनके जीवन में कुछ तो बदलाव आना प्रारंभ हुआ है | किसी ने सिंचाई के लिए कुआं बनवाया किसी ने घर की छत सुधरवाई तो किसी ने साल भर के अनाज की व्यवस्था की तो किसी ने बच्चों के लिए कपडे ख़रीदे | इन किसानो की आजीविका के लिए कुछ अतिरिक्त आय बहुत मायने रखती है, सी.डी.सी. इस आजीविका परियोजना के माध्यम से इस प्रयास को और मजबूती देने का प्रयास कर रही है |

कुछ सफल और उल्लेखनीय प्रयासों को संकलित करने का हमने प्रयास किया है इन सफल प्रयासों का संकलन इंद्रकुमार, पंचम और प्रवीण द्वारा किया गया :

vky dh Qly l flpkb dk lk/ku

d"kd xkefl g iUn tk fd xke uudkVkyk xke ipk;r fl tk k tuin !g ftyk !kyk#kkV e viu if $k lfgr fu$kl d rk g d"kd dk %kVk if $k g ftle if&u '$ nk !(p)kkfey g* d"kd dh xk$ e dy + 'd, vflfpr tehu g ftll if $k dk -k .k/ik"k.k gkrk g 0krh e e1dk* 2$k * dknk* dVdh txuh* kb* l lk dh Qly yh tkrh g3 ftldk 45kkuh; !ktk e !gn de ekx g vk ftudk fd l6ekutud e7; -kh fdlku dk ugh fey ikrk g3 if ;ktuk 8k k $"k 9:;< e d"kd dk =: fdyk vky dk !ht

ki.k grq inku fd;k x;k ftl d"kd u viuh !k,h e yxk;k* pkfd tehu vflfpr gku d dk .k vky dh Qly e fudV e f45kr rkyk! tk fd !"kk/kkf r g l >/< !k gh ikuh dh flpkb dh xb* ftll vky dk ?&iknu >@: fdykxke gvk* ftle l d"kd u >:: fdykxke !ktk e !pd @::: Ai; ikBr fd;k lk5k gh >: fdykxke !,h !fgu '$ >: fdykxke viuh %kVh !fgu dk ekxfyd dk;l e lg;kx fd;k '$ >: fdykxke 4$; #k d ?i;kx e fy;k3 lk5k gh d"kd u v! viuh !k,h e viu !V '$ 4$; dh ith l !k d $k;k g ftle i;kBr ikuh fudyk g ftle ekV -kh yx$k yh xb g ftll v! !k,h d lk5k vkl/ikl dh tehu -kh flfpr gku yxh g v! d"kd !k,h e vky* vn d* B;kt* e5kh* vkfn dk ?&iknu !ktk '$ 4$; d fy' d u yxk g3

vky¡ ?&iknu dk yk-k ls dqvk Okkn fy;k

d"kd fn$kAflg e kS$h xke vxUr k ipk;r ik,h tuin !g ftyk !kyk#kkV e viu if $k d lk5k fu$kl d rk g if $k e ekrk/firk d vyk$k nk iDh g d"kd dh if&u dh e&;¡ !hek h dh !tg ls gk pqdh g blfy' if $k d lpkyu dh l6i.k ft6enk h fn$kAflg i gh vk xbl g* budk ikl ;E 'd, vflfpr tehu g tehu e ! lkr d le; e e1dk* kb* l lk dh Qly yxkb tkrh g ftlls if $k dk -k .k/ik"k.k vklkuh ls gk ldk bruk ?&iknu ugh gkrk ikrk* blfy' fn$kAflg xk$ e gh feyu $kyh etnq h -kh d yrk g3

if ;ktuk 8k k $"k 9:;< e d"kd dk ;:: fdyk vky¡ dk !ht ki.k grq inku fd;k x;k ftls d"kd u viuh !k,h e yxk;k* ikuh dk !gr lk/ku u gku d !k$tn vky¡ dk ?&iknu >:: fdykxke gvk ftl d"kd u !ktk e !pd =@:: Ai;s vftr fd;k lk5k gh #k d Okkku e vky¡ ?i;kx !"k-k fd;k* vky¡ 8k k vftr '$ etnq h 8k k vftr ift ls d"kd u !k,h e 'd dqvk Okkk ftle i;kIr ikuh fudy x;k* ftlls budh !k,h e vn d* g7nh* vky* VekV * B;kt* f-k,h* ! !Vh* d yk t'lh Qly yxkb tku yxh vk viu #k d ?i;kx d lk5k/lk5k !ktk e !pd e7; vftr fd;k tku yxk ftlls d"kd '$?ldk if $k OkFkh/OkFkh gu yx3

दिवारू सिंह का नव

निर्मित कुआं

1. **ग्राम कदला से हितग्राही गनपत धुर्वे** जो की बैगा जाति से है, इनको परियोजना से 25 किलो आलू दिया गया था इन्होने {110*38} वर्ग फिट पर लगाया हुआ था जिसका उत्पादन 250 किलो हुआ इन्होने समय समय पर निर्देशों का पालन किया इन्होने 210 किलो आलू को बाज़ार मे बेच दिया शेष 40 किलो को घर मे उपयोग के लिए रख लिया इनको कुल 5000 हजार रूपए का लाभ हुआ| **इनके जीवन मे बदलाव:-** 5000 हजार रूपए का लाभ मिलने से ये लोग अच्छे कपड़े अच्छा भोजन बच्चो का अच्छी परवारिश शिक्षा जैसे कार्यो मे सुधार के बारे में सोच रहे हैं |

2.ग्राम नुनकाटोला से जयचंद धुर्वे आदिवासी गोंड जाति के है| इनको परियोजना से 20 किलो आलू दिया गया था इन्होने [66*09] वर्ग फिट पर लगाया हुआ था जिसका उत्पादन 210 किलो हुआ इन्होने समय समय पर निर्देशों का पालन किया इन्होने 190 किलो आलू को बाज़ार मे बेच दिया शेष 20 किलो को घर मे उपयोग के लिए रख लिया इनको कुल 4200 रूपए का लाभ हुआ|
जिन्दगी मे बदलाव:- 4200 रूपए का लाभ होने से इन्होने अपने घर मे देसी मुर्गियों के बच्चे बकरी के बच्चे खरीद लिए जिससे और ज्यादा आय हो सकता है|

3.ग्राम सरईटोला से सम्मेलाल तारम:- आदिवासी गोंड जाति के है| इनको परियोजना से 30 किलो आलू दिया गया था इन्होने [27∗75] वर्ग फिट पर लगाया हुआ था जिसका उत्पादन 260 किलो हुआ इन्होने समय समय पर निर्देशों का पालन किया इन्होने 240 किलो आलू को बाज़ार मे बेच दिया शेष 20 किलो को घर मे उपयोग के लिए रख लिया इनको कुल 5200 रूपए का लाभ हुआ |

जिन्दगी मे बदलाव:- इनकी जिन्दगी पहले से बेहतर है अच्छा भोजन खाने लगे अच्छा सब्जी भाजी उगाने लगे और बाज़ार मे बेचने लगे |

4.ग्राम खुर्सीपार से बरन सिह उइके:- आदिवासी गोंड जाति के है| इनको परियोजना से 30 किलो आलू दिया गया था इन्होने [14∗32] वर्ग फिट पर लगाया हुआ था जिसका उत्पादन 270 किलो हुआ इन्होने समय समय पर निर्देशों का पालन किया इन्होने 250 किलो आलू को बाज़ार मे बेच दिया शेष 20 किलो आलू का घर मे उपयोग किया | इनको 5400 रूपए का लाभ हुआ|

जिन्दगी मे बदलाव:- इनके जिन्दगी मे पहले से बेहतर बदलाव हुआ इन्होने फसल उगाना अच्छे से सीख लिया अब बरनसिंह ने नयी नयी फसल उगाना शुरु की है, बच्चो को अच्छे से पढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं और बैंक में भी कुछ बचत करना शुरू की है |

5. ग्राम धनियाझोर संता सिह तेकाम :- आदिवासी गोंड जाति के है| इनको परियोजना से 12 किलो आलू दिया गया था इन्होने {44*27} वर्ग फिट पर लगाया हुआ था जिसका उत्पादन 100 किलो हुआ इन्होने समय समय पर निर्देशों का पालन किया इन्होने 80 किलो आलू को बाज़ार मे बेच दिया शेष 20 किलो आलू का घर मे उपयोग किया | इनको 2000 रूपए का लाभ हुआ|

इनकी जिन्दगी मे बदलाव:- पहले वर्ष की कामयाबी से काफी खुश हैं और इन्होने इस वर्ष स्वयं आलू बाज़ार से खरीदकर लगाया है| पिछले वर्ष इन्होने 12 किलो आलू लगाया था जिसका उत्पादन 100 किलो हुआ इस वर्ष इन्होने 50 किलो आलू लगाया है| जिसका उत्पादन लगभग 500 किलो होगा जो अनुमानत: 10,000 हजार रूपए का होगा पिछले साल आलू फसल बेचकर इन्होने रूपए जमा किया और इस वर्ष ज्यादा आलू लगाया |

6. ग्राम अगन्त्रा से चतुर सिह धुर्वे:- :- आदिवासी गोंड जाति के है| इनको परियोजना से 50 किलो आलू दिया गया था इन्होने [45*95] वर्ग फिट पर लगाया हुआ था जिसका उत्पादन 470 किलो हुआ इन्होने समय समय पर निर्देशों का पालन किया इन्होने 440 किलो आलू को बाज़ार मे बेच दिया शेष 30 किलो आलू का घर मे उपयोग किया, इनको लगभग 9400 रूपए का लाभ हुआ|

इनकी जिन्दगी मे बदलाव:- कुछ अतिरिक्त आय प्राप्त होने से परिवार ने बीमारियों का इलाज़ अच्छे डॉक्टर से कराया, खान पान रहन सहन मे काफी पहले से अच्छा बदलाव हुआ है| इस वर्ष बहुत अच्छा सब्जी भाजी अपने बाड़ी मे उगाये है| अब इन्होने अपने आय का अच्छा रास्ता अपना लिया है| स्वय खेती करने का सीख इन्होने पा ली है| अब ये किसी और पर निर्भर नहीं रहना चाहते और समय पर अपनी फसल उगाकर बाज़ार मे बेचकर अच्छा लाभ कमा सकते है |

जैविक खेती की और बढ़ते कदम :

मीना ताराम ग्राम नुनकाटोला की निवासी है, जो आजीविका संबर्धन परियोजना से जुडी हुई है, मीना के परिवार मे सास-ससुर, बच्चे एवं पति सहित कुल 09 सदस्य है| परिवार मे लगभग 9 एकड़ जमीन है, खेती करने हेतु बैल भी है, मीना का मेल-जोल कार्यकर्तायो से होता रहता है, जिस पर वर्मीपिट खाद की उपयोगिता को लेकर बात की गई, व बनाने पर सरकार से लाभ दिलवाने का भरोसा दिलवाया गया, मीना ने कार्यकर्तायो की बात को मानकर जल्द से जल्द सामागी इकट्टी कर शुरूवात मे अपने पैसे लगाकर से वर्मीपिट का निर्माण करवाया है, मीना का आवेदन हॉर्टिकल्चर विभाग की योजना **जैविक एवं टिकाऊ कृषी विकास कार्यक्रम अंतर्गत वर्मीपिट निर्माण पर अनुदान योजना** के तहत अनुदान हेतु प्रस्तावित किया गया है, इस योजना के तहत रु.3000 दिए जाते हैं, निर्माण के पश्चात् केंचुआ की उपलब्धता विभाग के स्टाफ द्वारा स्थानीय फार्म हाउस से की जावेगी, संस्था की और से खाद निर्माण, प्रबंधन और उपयोग पर विधिवत प्रशिक्षण दिया जा चुका है |

कम लागत का कम्पोस्ट पिट

ग्राम सरईटोला के परियोजना के हितग्राही रामसिंग धुर्वे जो की वर्ष 2014 से जुड़ा हुआ है, संस्था द्वारा आयोजित होने वाली सभी बैठकों में इनकी भागीदारी रही है |

संस्था ने बैठको एवं प्रशिक्षणों में जैविक खाद बनाने को लेकर लगातार बातचीत की, एवं कार्यकर्ताओं द्वारा भी ग्राम भ्रमण मे भी इसे लेकर बातचीत की जाती रही है, कम्पोस्ट बनाने के कई तरीकों पर प्रशिक्षण दिया गया, जिससे प्रेरित होकर हितग्राही रामसिंग धुर्वे ने अपनी बाड़ी में बेशरम का टटिया नाडेप बनाने हेतु बेशरम, खुटी, कचरा, आदि का संग्रहण परिवार में पत्नी एवं पुत्र के साथ मिलकर एक सप्ताह के अन्दर किया, आवश्यक समाग्री एकत्र करने के बाद एक दिन में ही इसकी भराइ परत दर परत इस प्रकार बिछाकर किया, पहली परत घास, दूसरी परत गोबर, तीसरी परत मिट्टी, चौथी परत गोबर, पांचवी परत बाड़ी का कचरा फिर मिट्टी इस प्रकार 05 परत बिछाई, एवं टाँके को पूरा भरकर ऊपर के भाग को पुरी तरह से गीला करके मिटटी से छबाई कर दिया है|

टाँके का माप 10 फिट लम्बा चौड़ा 05 फिट, ऊचाई 04 फिट रखी गई है, इनके पास लगभग 03 एकड़ भूमि है, जिसमे बरसाती खेती की जाती है, साथ ही इनके पास 08 पालतु जानवर गाय, बैल, है| जिससे प्रतिदिन 35 से 40 किलो गोबर होता है, हितग्राही ने भविष्य में बायो गेस योजना से भी जुड़ने की इच्छा जताई है |